प्रश्न

(क) रिक्त स्थान भरें

1. विमुद्रीकरण के बाद पुरानी मुद्रा व .... की कोई कीमत नहीं रह जाती। (नोटों/महँगाई)
2. सरकार द्वारा पुराने नोटों को बैंकों से बदलने के लिए .... दिया जाता है। (समय/धन)

(ख) सही या गलत का चयन करें

1. सरकार पुरानी मुद्रा को कानूनी तौर पर बंद कर देती है।
2. नोटबंदी के चलते आम आदमी को भी काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।
3. सरकार को उम्मीद है कि नोटबंदी से कालेधन, नकली नोट और आतंकवाद पर अंकुश लगेगा।

(ग) अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. विमुद्रीकरण क्या है?
2. उपर्युक्त वार्तालाप किनके मध्य हो रहा है?
3. अध्यापिका कक्षा को संबोधित करते हुए क्या कहती है?

वाद-विवाद

वाद-विवाद किसी विषय के पक्ष या विपक्ष में अपने विचारो की तर्कपूर्ण अभिव्यक्ति है। जन-जागरूकता फैलाने और लोगों का ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से कई संगठनों द्वारा वाद-विवाद का आयोजन किया जाता है। वाद-विवाद में दो पक्ष होते हैं–1. समर्थक अर्थात् समर्थन करने वाला (पक्ष) 2. विरोधी अर्थात् विरोध में बोलने वाला (विपक्ष)।

वाद-विवाद की विशेषताएँ

- वाद-विवाद मे दो विपरीत विचारो के समर्थक अपना-अपना तर्क रखते हैं।
- वाद-विवाद में तथ्यात्मक सटीकता और तार्किक सुसंगति होनी चाहिए।
- वाद-विवाद में आलोचनात्मक सोचने और वर्तमान जानकारी के साथ बातचीत करने की क्षमता का विकास होता है।
- वाद-विवाद में सार्वजनिक रूप से बोलने और अपने विचारों को वाक्पटुता से व्यक्त करने का आत्मविश्वास मिलता है।
- वक्ता को यह स्पष्ट करना चाहिए कि वह पक्ष मे बोल रहा है या विपक्ष मे।
- वाद-विवाद में शालीन एवं गरिमापूर्ण भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- अपने भाषण के विशिष्ट तथ्य अध्यक्ष को सम्बोधित करके बताने चाहिए।
- समय-समय पर आवश्यकतानुसार विरोधी वक्ता के कथनों को उद्धृत किया जाना चाहिए।

वाद-विवाद का उदाहरण

"क्या जल संरक्षण के लिए कठोर कानून लागू किए जाने चाहिए?"

पक्ष में

परमादरणीय अध्यक्ष महोदय! आज की वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय है-"**क्या जल संरक्षण के लिए कठोर कानून लागू किए जाने चाहिए?**" मैं इसके पक्ष में अपने विचार व्यक्त करना चाहूँगा। मुझे आशा है कि आप लोग मेरे विचारों को ध्यान से सुनेंगे और उचित विचारों की सराहना करेंगे।

मैं इस पक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करना चाहता हूँ कि जल संरक्षण के लिए कठोर कानून लागू किए जाने चाहिए। जल जीवन का मूल स्रोत है। बिना जल के जीवन की कल्पना असम्भव है। लेकिन दुर्भाग्यवश, आज जल का अत्यधिक दुरुपयोग हो रहा है। हमारे देश में नदियाँ, झीलें और भूजल स्रोत तेजी से सूख रहे हैं। यदि जल संकट को गम्भीरता से नहीं लिया गया, तो आने वाली पीढ़ियों को भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा।

आज भी कई राज्यों में जल संकट चरम पर है। राजस्थान, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और मध्य प्रदेश के कई क्षेत्रों में लोगों को पीने के पानी के लिए लम्बी दूरी तय करनी पड़ती है। शहरी क्षेत्रों में भी भूजल स्तर तेजी से गिर रहा है। ऐसे में, यदि कठोर कानून नहीं बनाए गए, तो स्थिति और भी भयावह हो सकती है।